ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

डेयरी क्लस्टर एवं
बकरी पालन कलस्टर
(पृष्ठ – 02)

गाय पालन से अंजलि दीदी के
जीवन में आई खुशहाली
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना
से मिला राह
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – जून 2023 ।। अंक – 23

पशुपालन से मिली "आर्थिक समृद्धि एवं खुशहाल जीवन"

बिहार में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत वित्तीय वर्ष 2018–19 में की गयी। योजना अन्तर्गत जीविकोपार्जन संवर्धन, क्षमता वर्द्धन एवं वित्तीय सहायता तथा अभिसरण आदि के माध्यम से अत्यंत निर्धन परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। जीविका द्वारा इस योजना का क्रियान्वयन पूरे राज्य में किया जा रहा है। अबतक राज्य के तक़रीबन 1 लाख 62 हजार से अधिक अत्यंत निर्धन परिवारों को इस योजना से जोड़कर उनके आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु कार्य किए जा रहे हैं। चयनित लाभार्थियों द्वारा विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियाँ संचालित की जा रही है। जीविकोपार्जन गतिविधि के अंतर्गत पशुधन गतिविधियों से भी अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर बना रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़े अत्यंत निर्धन परिवारों में से लगभग 56 हजार परिवारों ने पशुपालन व्यवसाय जैसे – बकरी पालन, गव्य/भैंस पालन एवं मुर्गी पालन को अपने जीविकोपार्जन विकल्प के रूप में अपनाया है।

बकरी पालन

राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे अत्यंत निर्धन परिवारों का बकरी पालन एक मुख्य व्यवसाय है जिसे अत्यंत गरीब, भूमिहीन, महिला प्रधान परिवार आसानी से करके अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना अन्तर्गत लगभग 52 हजार परिवार बकरी पालन व्यवसाय अपनाकर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना द्वारा प्रशिक्षित मास्टर संसाधन सेवियों द्वारा बकरी पालक दीदियों को प्रशिक्षण देकर 'वैज्ञानिक विधि' से बकरी पालन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। मास्टर संसाधन सेवियों द्वारा साप्ताहिक गृह भ्रमण कर बकरी पालन के विविध आयामों जैसे – आवास प्रबंधन, आहार प्रबंधन, प्रजनन प्रबंधन एवं स्वास्थ्य प्रबंधन आदि पर विभिन्न माध्यमों से विस्तृत जानकारी देते हुए उसका अनुपालन एवं क्रियान्वयन सुनिश्चित कराया जा रहा है।

'पशु स्वास्थ्य वार्षिक कैलेंडर' के अनुसार सभी बकरियों को पशु सखी द्वारा घर–घर जाकर कृमिनाशक दवा पिलाया जा रहा है एवं बकरियों में होनेवाले जानलेवा बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण कराया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप बकरियों के मृत्यु–दर में काफी कमी आयी है। बकरियों को स्वस्थ एवं सुरक्षित रखने हेतु योजना से एवं मनरेगा कार्यक्रम के साथ अभिसरण कर बकरी शेड का निर्माण कराया जा रहा है। साथ ही त्यौहार के समय स्थानीय स्तर पर बकरी हाट लगाकर बकरियों को बेचने की व्यवस्था की जा रही है जिससे दीदियों को बकरियों की बिक्री से अच्छा मुनाफा प्राप्त हो रहा है।

गव्य/भैंस पालन

सतत् जीविकोपार्जन योजना अन्तर्गत लगभग 4 हजार परिवारों द्वारा गव्य/भैंस पालन को अपने जीविकोपार्जन विकल्प के रूप में अपनाते हुए दुग्ध उत्पादन एवं बिक्री का व्यवसाय किया जा रहा है। गव्य/भैंस पालन से जुड़ी दीदियों को अच्छे नस्ल के दुधारू पशुओं की खरीद में सहयोग देने से लेकर पशु शेड निर्माण कराने, संतुलित आहार खिलाने, टीकाकरण करवाने, बीमा करवाने आदि गतिविधियों में सहयोग दिया जाता है। इसके साथ–साथ प्रशिक्षित मास्टर संसाधन सेवियों द्वारा साप्ताहिक गृह भ्रमण कर गव्य/भैंस पालन के विविध क्रियाकलापों पर विभिन्न माध्यमों से विस्तृत जानकारी देते हुए उसका अनुपालन एवं क्रियान्वयन सुनिश्चित कराया जा रहा है।

दीदियों द्वारा उत्पादित दूध के स्थायी रूप से विपणन हेतु गांव में कॉम्फेड द्वारा चलाये जा रहे दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति में उन्हें जोड़ा जा रहा है। जिन गाँवों में सहकारी समिति नहीं है वहां केवल योजना अन्तर्गत चयनित दीदियों का दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति बनाकर दुग्ध संग्रहण केंद्र द्वारा संग्रहण एवं विपणन किया जा रहा है। कॉम्फेड द्वारा नियमित अंतराल पर भुगतान की गई राशि को दीदियों के बैठक में उनके द्वारा संग्रहण केंद्र में दिए गए दूध की मात्रा के आधार पर वितरित किया जाता है जिससे दीदियों के वित्तीय लेन–देन में पारदर्शिता बनी रहती है। इस प्रकार गव्य/भैंस पालन से जुड़ी दीदियां सफलता पूर्वक दुग्ध व्यवसाय से अच्छी आमदनी अर्जित करते हुए विकास की मुख्य धारा से जुड़ रही है।

डेयरी क्लस्टर

सतत् जीविकोपार्जन योजना अन्तर्गत वर्तमान में राज्य के भागलपुर जिले के पीरपैंती एवं सबौर प्रखंड में तथा मुंगेर जिले के धरहरा एवं हवेली खड़गपुर प्रखंड में डेयरी क्लस्टर संचालित है। दोनों जिले मिलाकर डेयरी क्लस्टर से 154 अत्यंत निर्धन परिवार जुड़े हैं जिनमें से अधिकांश परिवार अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के हैं। पूर्व में इनमें से अधिकांश परिवार देशी शराब के उत्पादन एवं बिक्री के व्यवसाय से जुड़े थे जो अब सतत् जीविकोपार्जन योजना में चयनित होने के पश्चात गव्य पालन से जुड़कर सफलतापूर्वक दुग्ध उत्पादन एवं विक्री का व्यवसाय कर रहे हैं।

डेयरी क्लस्टर स्तर पर योजना द्वारा निम्न गतिविधियाँ संचालित की जा रही है:

- दीदियों को जीविकोपार्जन निवेश निधि से अच्छे नस्ल के दुधारू पशुओं की खरीद में सहयोग करना।
- योजना के विशेष निवेश निधि से अथवा मनरेगा के अभिसरण से पशु शेड निर्माण कराने में सहयोग करना।
- पशु का टीकाकरण एवं बीमा करवाने में सहयोग करना।
- प्रशिक्षित मास्टर संसाधन सेवी द्वारा साप्ताहिक गृह भ्रमण कर वैज्ञानिक विधि से गव्य पालन विषय पर विस्तृत जानकारी देना एवं उसका अनुपालन सुनिश्चित कराना।
- दीदियों द्वारा उत्पादित दूध के स्थायी रूप से विपणन हेतु गांव में कॉम्फेड के सहयोग से दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति का गठन करना अथवा पूर्व से चलाये जा रहे दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति में उन्हें जोड़ना।
- दुग्ध संग्रहण केंद्र की स्थापना एवं उसके नियमित संचालन में सहयोग करना।
- वित्तीय लेन–देन में पारदर्शिता बनाये रखने हेतु कॉम्फेड द्वारा भुगतान की गई राशि को दीदियों के बैठक में वितरित कराना।

डेयरी क्लस्टर से जुड़ी दीदियों द्वारा अबतक दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति के माध्यम से दुग्ध संग्रहण केंद्र में 66 लाख 83 हजार कीमत का दूध दिया गया है। डेयरी क्लस्टर से जुड़ी दीदियां सफलता पूर्वक दुग्ध व्यवसाय से अच्छी आमदनी करते हुए आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ रही है।

बकरी पालन क्लस्टर

सतत् जीविकोपार्जन योजना अन्तर्गत वर्तमान में राज्य के 3 जिले – रोहतास, गया एवं सारण में बकरी कलस्टर कार्यरत है। तीनों जिले के 170 अत्यंत निर्धन परिवार बकरी पालन क्लस्टर से जुड़कर सफलतापूर्वक बकरी पालन का व्यवसाय कर रहे हैं। बकरी पालन क्लस्टर का मुख्य उद्देश्य है कि सतत् जीविकोपार्जन योजना अन्तर्गत बकरी पालन से जुड़े परिवारों को वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन की सर्वोत्तम कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी देना एवं उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित कराना। योजना अन्तर्गत बकरी पालन क्लस्टर हेतु जिले के वैसे पंचायत / गांव का चयन किया गया है जहाँ बकरी पालन करने वाले परिवारों की संख्या अधिक है। बकरी पालन क्लस्टर 30 से 100 बकरी पालन करने वाले परिवारों को एक साथ मिलाकर बनाया गया है। प्रत्येक परिवारों को योजना के जीविकोपार्जन निवेश निधि से 3 से 4 अच्छे नस्ल की बकरियाँ ग्राम संगठन द्वारा खरीदकर बकरी पालन व्यवसाय प्रारम्भ करने हेतु दिया गया है।

बकरी पालन से जुड़ी दीदियों को योजना द्वारा निम्न सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही है :

- दीदियों को जीविकोपार्जन निवेश निधि से अच्छे नस्ल की बकरियों की खरीद में सहयोग करना।
- योजना के विशेष निवेश निधि से अथवा मनरेगा के अभिसरण से बकरी शेड निर्माण कराने में सहयोग करना।
- वार्षिक स्वास्थ्य कैलेंडर के अनुसार सभी बकरियों को पशु सखी द्वारा घर – घर जाकर कृमिनाशक दवा पिलाना एवं बकरियों में होनेवाले जानलेवा बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण कराना।
- प्रशिक्षित मास्टर संसाधन सेवी द्वारा साप्ताहिक गृह भ्रमण कर वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन विषय पर विस्तृत जानकारी देना एवं उसका अनुपालन सुनिश्चित कराना।
- त्यौहार के समय स्थानीय स्तर पर बकरी हाट लगाकर बकरियों को बेचने की व्यवस्था कराना।
- दीदियों को बकरियों की बिक्री से अच्छा मुनाफा प्राप्त हो इसके लिए वजन के आधार पर बकरियों को बेचने हेतु दीदी को जागरूक करना।
- दीदियों को बकरी पालन सम्बंधित सभी प्रकार की जानकारी देने एवं बकरी में होने वाले बिमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण कराने की सुविधा प्रदान करने हेतु पशु परामर्श सह टीकाकरण केंद्र की स्थापना करना।

बकरी पालन क्लस्टर से जुड़ी दीदियाँ उपरोक्त सुविधाओं के सहयोग से सफलतापूर्वक बकरी पालन व्यवसाय से अच्छी आमदनी करते हुए आर्थिक प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है।

गाय पालन से अंजली दीदी के जीवन में आई खुशहाली

अंजली मुर्मु भागलपुर जिले के पीरपैंती प्रखंड के परसबन्ना पंचायत की निवासी है। दीदी पहले शराब बनाने एवं बेचने का कार्य करती थी। बिहार में पूर्ण शराबबंदी के बाद दीदी का शराब बनाने एवं बेचने का रोजगार समाप्त हो गया जिससे दीदी के आमदनी का स्त्रोत बंद हो गया। दीदी को अपने परिवार को चलाने में काफी दिक्कत होने लगी। इस तरह दीदी की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर होने लगी यहाँ तक की दीदी को कभी–कभी दो वक्त का भोजन मिलना भी मुश्किल हो गया था।

जुलाई 2020 में बसंत जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा दीदी का चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत किया गया। चयन के बाद दीदी को मास्टर संसाधन सेवी द्वारा क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षण दिया गया एवं दीदी ने सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया के दौरान गव्य पालन करने की इच्छा व्यक्त की। इसके बाद दीदी को वैज्ञानिक विधि से गव्य पालन करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया। दीदी को ग्राम संगठन द्वारा जीविकोपार्जन निवेश निधि से 50000/– रुपये गाय खरीदने हेतु दिया गया जिससे दीदी पीरपैंती हाट से एक गाय खरीदी एवं विशेष निवेश निधि मद से दीदी को 10000/– रुपये दिया गया जिससे दीदी ने गाय रखने हेतु शेड बनाया। दूध की नियमित बिक्री हेतु दीदी को दुग्ध उत्पादक सहयोग समिति से जोड़ा गया एवं दीदी को गाय के खान–पान, रखरखाव एवं दूध बढ़ाने आदि के बारे में समय–समय पर जानकारी प्रदान की गयी।

अंजली दीदी गाय पालन का व्यवसाय सफलता पूर्वक करने लगी एवं धीरे–धीरे अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने लगी। वर्तमान में गाय पालन से दीदी को 6000/– रुपये प्रति माह से अधिक की आमदनी हो रही है जिससे दीदी अपने परिवार का भरण–पोषण अच्छे से कर रही है। बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दे रही है। दीदी द्वारा ख़रीदे गए गाय से अभी दीदी के पास 2 बाछी एवं 1 बाछा है जिसकी कीमत लगभग 30000/– रुपये है। गाय पालन की आमदनी से दीदी बकरी पालन, मुर्गी पालन एवं बत्तक पालन भी कर रही है जिसकी कीमत लगभग 15000/– रूपये है। दीदी ने आमदनी से बचत करके 11870/– रूपये बैंक में जमा करके रखी है।

दीदी गाय पालन का व्यवसाय करके आर्थिक रूप से सबल बन रही है। दीदी अपने गाय पालन के रोजगार को और बढ़ाना चाहती है जिससे उनकी आमदनी और बढ़े एवं वो अपने पूरे परिवार के जीवन में और खुशहाली ला सके।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिला सम्मान जनक जीवन

उषा देवी जहानाबाद जिले के मखदुमपुर प्रखंड की निवासी है। उषा देवी का जीवन बचपन से ही काफी संघर्ष पूर्ण रहा है। उनके पिता एवं पूरा परिवार देशी शराब के व्यवसाय से जुड़े थे। बचपन से ही शराब व्यवसाय से जुड़ी उषा देवी को कभी पढ़ने का भी अवसर नहीं मिला एवं उनकी शादी कम उम्र में ही करा दी गई। शादी के कुछ दिन बाद ही उनके पति रामेश्वर मांझी उनको छोड़कर चले गए। उषा देवी एवं उनके परिवार वालों ने रामेश्वर मांझी को बहुत ढूंढा लेकिन उनका कुछ पता नहीं चला। उसके बाद उषा देवी वापस अपने मायके लौट आयी और पहले की तरह शराब व्यवसाय में अपने परिवार का हाथ बटाने लगी।

उषा देवी की आर्थिक स्थिति को देखते हुए वर्ष 2021 में उन्हें सतत जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। योजना से जुड़ने के बाद उषा दीदी को जीविकोपार्जन निवेश निधि से किराना दुकान हेतु 20000/– रुपये एवं जीविकोपार्जन अंतराल राशि के रूप में 7 माह तक 1000/– रुपये प्रतिमाह कुल 7000/– रुपये दिया गया। कुछ ही दिनों में दीदी ने दुकान की आमदनी से बकरी खरीद कर दुकान के साथ–साथ बकरी पालन व्यवसाय भी करने लगी। दीदी ने सर्वप्रथम बकरियों के झुण्ड को बढ़ाना प्रारम्भ किया उन्होंने बकरी से प्राप्त पाठे को बेचकर पाठी खरीदना शुरू कर दिया। इस प्रकार बहुत ही कम समय में उनके पास 18–20 बकरियों का झुण्ड तैयार हो गया जिससे उन्हें प्रत्येक 8–9 महीने में 25 से 30 बच्चे प्राप्त होने लगे। दीदी के पास अभी कुल 64 बकरियाँ है। अभी दीदी के पास लगभग 3 लाख की संपत्ति हो चुकी है एवं दीदी को बकरी पालन एवं दुकान से औसतन प्रतिमाह 13 से 15 हजार रूपये की आमदनी हो रही है। उषा दीदी बकरी पालन से अपने गांव में एक अलग पहचान बना चुकी है एवं सम्मान जनक जीवन जी रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिला राह

माला देवी समस्तीपुर जिले के वारिसनगर प्रखंड के रहुआ पश्चिम पंचायत की निवासी है। उनके पति मजदूरी का कार्य करते हैं। माला देवी एवं उनके पति संतोष मंडल दोनो दिव्यांग हैं। माला देवी एवं उनके पति दूसरे के खेतों में मजदूरी कर या मांग कर किसी तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे। वर्ष 2019 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लाभार्थीयों के चयन हेतु ड्राइव चलाया गया। इस दौरान अभिलाषा जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा माला देवी का चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया। चयन के बाद मास्टर संसाधन सेवी द्वारा माला देवी के क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षण दिया गया। इसके उपरांत सूक्ष्म नियोजन प्रकिया के दौरान माला देवी ने बकरी पालन करने की इच्छा व्यक्त की। इसके बाद माला देवी को बकरी पालन हेतु क्षमतावर्धन एवं व्यवसाय प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया। माला देवी ने ग्राम संगठन के माध्यम से विशेष निवेश निधि मद में प्राप्त 10,000 रुपये की राशि से बकरी शेड बनवाया। ग्राम संगठन द्वारा जीविकोपार्जन निवेश निधि मद के 16,000 रुपये में चार बकरी, चारा, गमला इत्यादि भी माला देवी को खरीद कर दिया गया। इसके अलावा जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के रूप में 7 माह तक 1000 रुपये प्रति माह भरण–पोषण हेतु प्रदान किया गया। प्रत्येक 3 माह के अंतराल पर माला देवी को बकरी पालन एवं सही रखरखाव हेतु प्रशिक्षण दिया गया। अभिलाषा जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा समय–समय दीदी के व्यवसाय का निरीक्षण किया जाता है और जरूरत के अनुसार उनको सहयोग प्रदान किया जाता है। जो उन्हें समाज के मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो रहा है। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत बकरी पालन करते हुए उन्होंने विगत 36 महीने के दौरान बकरियों की संख्या 8 से बढ़ाकर 27 कर ली है। इन बकरियों को बेच कर उन्हें प्रत्येक माह औसतन 6,000 से 8,000 रुपये की आय हो जाती है। वर्तमान समय में उनकी कुल परिसम्पति लगभग 98,740 रुपये है। उन्होंने बैंक खाते में अपने बचत के 2350 रुपये जमा किये हैं। वह अपने बच्चों को पढ़ा रही है। उन्हें सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं से आच्छादित किया गया है। आज उनके पास सुरक्षित आवास, जन वितरण प्रणली के तहत राशन, दिव्यांगजन पेंशन, पीने के लिए शुद्ध पानी सहित अन्य मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं। 24 माह पूरा करने के बाद मार्च 2022 में माला देवी को सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत ग्रेजुएशन प्रशिक्षण दिया गया और प्रशिक्षण उपरांत उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने का उनका कार्यकाल 36 महीने का हो चुका है। इस दौरान दीदी द्वारा बकरी पालन गतिविधि अपनाने से उनकी स्थिति में काफी बदलाव हुए हैं। बकरी पालन के तहत उनकी आर्थिक स्थिति में हुए सुधार को निम्न तालिका से समझ सकते हैं;

वर्ष	कुल संपत्ति (रुपये में)	आय (रुपये में)	कुल कारोबार (रुपये में)
2020	16,000	17,500	33,500
2021	53,500	42,500	96,000
2022	79,780	60,000	1,39,780
2023	98,740		

माला देवी भविष्य में अपने बकरी पालन व्यवसाय को बड़े पैमाने पर ले जाना चाहती हैं एवं वह बकरी फॉर्म खोलना चाहती हैं। वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान कराकर उनके भविष्य को उज्जवल बनाना चाहती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन – राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री मनीष कुमार – प्रखंड परियोजना प्रबंधक